RJPP, Vol. XIX, No.I, 2021, ISSN (P) : 0976-3635, (e) :2454-3411, Impact Factor 8.232

जनपद–महराजगंज में महिला साक्षरता एवं विकास

सत्यकाम पाण्डेय
(शोध छात्र)
ईमेलः satyakampandey4u@gmail.com

हरिराम यादव
ऐसोसिएट प्रोफेसर
मदन मोहन मालवीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
भाटपार रानी, देवरिया (उ० प्र०)

सारांश

शिक्षा न केवल सामाजिक, आर्थिक विकास में सहायक होती है, अपितु इसका प्रसार किसी क्षेत्र या समाज विशेष के सर्वांगीण विकास का भी द्योतक माना जाता है। वर्तमान समय में साक्षरता स्तर बढ़ा है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों एवं महिलाओं में समरसता अभी भी कम है। इसको उच्च किए बिना देश का विकास सम्भव नहीं है। अध्ययन क्षेत्र महराजगंज एक निम्न महिला साक्षरता युक्त जनपद है, जिसकी महिला साक्षरता (48.92%), जो उत्तर प्रदेश (59.26%) से कम है। महराजगंज जनपद में महिला साक्षरता एवं विकास का विश्लेषण किया गया है।

मूल बिन्दु

साक्षरता, ग्रामीण विकास, महिला साक्षरता, साक्षरता अन्य।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 02.09.2021
Approved: 15.09.2021

सत्यकाम पाण्डेय
हरिराम यादव

जनपद–महराजगंज में महिला साक्षरता एवं विकास

RJPP 2021,
Vol. XIX, No. II,

pp.335-339
Article No. 44

Online available at *:*
https://anubooks.com/rjpp-2021-vol-xix-no-1

साक्षरता से तात्पर्य इन व्यक्तियों से है जो किसी भी भाषा में पढ़ एवं लिख सकते हैं। आर्थिक विकास के लिए देश के अतिकतम लोगों को कम से कम उस स्तर तक शिक्षा ग्रहण करना आवश्यक है ताकि वे लिखे हुए निर्देश तथा अन्य महत्वपूर्ण बातों को भली–भॉति समझ कर उस सन्दर्भ में निर्णय ले सकें।

(आर0डी0 त्रिपाठी, 1990)

साक्षरता का गरीबी उन्मूलन, मानसिक,एकाकीपनी समाप्तिकरण शांतिपूर्ण तथा भाई बंधु वाले अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के निर्माण और जनसांख्यिकीय प्रक्रिया की स्वतंत्रता क्रियाशीलता में भारी महत्व है। साक्षरता प्रतिरूप समाज के सामाजिक –आर्थिक विकास की गति सूचक है।

(आर0सी0 चांदना, 1980)

न्यूनतम स्तर पर शिक्षित होना ही साक्षरता कहलाता है। साक्षरता स्तर की क्षेत्रीय विभिन्नता एवं वितरण का अध्ययन जनसंख्या का महत्वपूर्ण पक्ष है जो किसी क्षेत्र विशेष की साक्षरता वृद्धि में आने वाली समझ समस्याओं के निराकरण में सहायक है। साक्षरता क्षेत्र विशेष के सामाजिक सांस्कृतिक स्वरूप को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है एवं प्रभावित होती है।

निःसन्देह शिक्षा और साक्षरता के प्रसार से ही आर्थिक और सामाजिक विकास की प्रक्रिया सम्पन्न होती है। क्षेत्र के सम्पूर्ण सामाजिक –आर्थिक व्यक्तित्व के ज्ञानार्थ साक्षरता के विकास को देखना आवश्यक होता है।

वस्तुतः साक्षरता के विकास से मनुष्य अपने सीमित परिवेश से बाहर निकल कर अपने क्षेत्र की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक प्रवृत्तियों से अन्योन्याश्रित सम्बन्ध स्थापित कर लेता है, जिससे एक इकाई के रूप में मानव ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण समाज विकास क्र में आगे आ जाता है।

महिला साक्षरता स्तर एवं किसी क्षेत्र में सामाजिक विकास स्तर के सकारात्मक सह–सम्बन्ध पाया जाता है। जैसे–जैसे किसी क्षेत्र विशेष में महिला साक्षरता की वृद्धि होती है । वैसे–वैसे सामाजिक एवं आर्थिक विकास के नए–नए मार्ग प्रशस्त होने लगते हैं। सामान्यतया किसी क्षेत्र में महिला साक्षरता में पर्याप्त विषमता मिलती है जो क्षेत्र में विद्यमान विविध सामाजिक आर्थिक, भौगोलिक कारणों के चलते होती है। भारत जैसे विशाल देश में जहाँ सामाजिक विविधता एवं आर्थिक विषमता प्रबल है। महिला शिक्षा के वितरण प्रतिरूप की प्रवृति तथा सामाजिक–आर्थिक दशाओं के तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अन्य विकसित अर्थव्यवस्था वाले देश या समाज में विभिन्न जनांकिकी तथ्यों जैसे मौन अनुपात जातीय संरचना और व्यावसायिक संरचना के अनुसार साक्षरता में अपेक्षाकष्त अधिक विशमता पायी जाती है। जबकि आर्थिक दृष्टि से अधिक विकसित देशों में विषमता कम दृष्टिगत होती है।

(कुसुम सिंह, 2002)

मानव शास्त्रीय दृष्टिकोण से साक्षरता जनप्रेक्षण का एक ऐसा सामाजिक पक्ष है, जिसके आधार पर सामाजिक विकास का मापदण्ड किया जा सकता है। भारत में किसी भाषा में एक सरल सूचना को पढ़ लिखकर समझ पाने वाले व्यक्तियों को साक्षर के अन्तर्गत रखा जाता है।

(राकेश सिंह 2008)

यही कारण है कि मानव विकास का मूल्यांकन साक्षरता भौगोलिक दृष्टि में जनसंख्या के सामाजिक आर्थिक विकास का बहुआयामी सूचक है। जनसंख्या आयोग ने उस व्यक्ति को साक्षर माना है, जो किसी भी भाषा में एक साधारण सन्देश को पढ़ लिख तथा समझ सके।

(हीरामल, 2001)

भारतीय जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार 07 वर्ष या उससे अधिक से अधिक उम्र का कोई व्यक्ति जो किसी भाषा में पढ़ लिख सकता है, साक्षर माना जा सकता है। विविधता न केवल क्षेत्रीय रूप में मिलती है वरन अंतर्क्षेत्रीय, अन्तर्राज्यीय, तहसील एवं विकास खण्ड स्तर पर भी मिलती है।

प्रस्तुत शोध प्रपत्र का उद्देश्य एक पिछड़े तन्त्र की महिला साक्षरता एवं प्रादेशिक विकास के अंर्तसम्बन्धों को स्पष्ट करना है। (भैयालाल, 2013)

महिला साक्षरता को प्रभावित करने वाले कारक

(1) ऐतिहासिक कारक।
(2) राजनीतिक कारक
(3) सामाजिक कारक
(4) आर्थिक कारक

आंकड़ा श्रोत एवं विधितन्त्र

प्रस्तुत शोध प्रपत्र जनपद महराजगंज में महिला साक्षरता का विकास खण्ड स्तर पर अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन से सांख्यिकी पत्रिका ताकि एवं सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया है।

अध्ययन क्षेत्र

महराजगंज जनपद उ0प्र0 के उ0 पूर्वी भाग में स्थित है। इसका अक्षांशीय विस्तर $25^0 5^0$ से $26^0 25^0$ उत्तरी अक्षांश तक तथा देशांतरीय विस्तार $83^0 25$ से $84^0 20$ पूर्वी देशांतर के मध्य पाया जाता है।

महराजगं जनपद का कुल क्षेत्रफल 2934.1 वर्ग किमी है। अध्ययन क्षेत्र में 4 तहसील 12 विकास खण्ड, 1262राजस्व गॉव , 7 नगर निकाय है। अध्ययन क्षेत्र की कुल जनसंख्या 26,84,703 है। 94.98% जनसंख्या ग्रामीण है। यहाँ जनसंख्या घनत्व 9.09 वर्ग कि0मी0 है तथा यहाँ का लिंगानुपात प्रति 1000 पुरूष पर 943 स्त्रियॉ हैं।

महिला साक्षरता

अध्ययन क्षेत्र में ही नहीं अपितु देश की महिला साक्षरता पुरूष साक्षरता की अपेक्षा कम पायी जाती है। जनगणना वर्ष 2001 के अनुसार भारत में महिला साक्षरता 54.16% एवं यही उत्तर प्रदेश में 42.22% , जबकि महराजगंज में 27.93% है।

सन् 1991 की जनगणना के प्राप्त ऑकड़ों में स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र के सभी विकास खण्डों के अन्तर्गत सर्वोच्च स्त्री साक्षरता ब्रह्मखण्ड विकास खण्ड 12.22% है। जबकि न्यूनतम स्त्री साक्षरता निचलौल का 6.44% है। इसके बाद क्रमशः साक्षरता दर परतावल विकास खण्ड का 11. 13% , धानी विकास खण्ड का 10.10 , फरैदा विकास खण्ड का 9.69% , लक्ष्मीपुर विकास खण्ड का 9.37, सिसवा विकास खण्ड 9.24% नौतनवा विकास खण्ड का 8.95% , घुघुली विकासखण्ड का 8.27% , मिठौरा विकास खण्ड का 7.50%, महराजगंज विकास खण्ड का 7.13% , पनियरा विकास खण्ड का 6.78% है।

सन् 2001 में स्त्री साक्षरता का प्रतिशत सर्वाधिक परतावल विकास खण्ड का 31.71% है। उसके बाद क्रमशः घुघुली विकासखण्ड 29.03%, फरेंदा विकासखण्ड का 27.72% , ब्रह्मगंज विकासखण्ड का 27.53% , महराजगंज विकास खण्ड का 27.21% , मिठौरा विकास खण्ड का 26.

58%, पनियरा विकासखण्ड का 25.88%, लक्ष्मीपुर विकासखण्ड का 25.84%, सिसवॉ विकासखण्ड का 25.51% , धानी विकासखण्ड का 24.76%निचलौल विकासखण्ड का 21.73% तथा नौतनवॉ विकासखण्ड का 21.32% का स्थान आता है।

2011 की जनगणना के अनुसार अधिकतम परतावल विकासखण्ड का 52.80% तथा न्यूनतम महिला साक्षरता दर नौतनवा विकासखण्ड के 43.53% है। उसके बाद क्रमशः घुघुली विकासखण्ड 50.81%, पनियरा विकासखण्ड का 49.52%, फरेंदा विकासखण्ड का 48.62% , मिठौरा विकासखण्ड का 48.60% सिसवा विकासखण्ड का 48.39% , महराजगंज विकासखण्ड का 47.41% , धानी विकास खण्ड का 46.96%, ब्रह्मगंज विकासखण्ड का 46.95%, लक्ष्मीपुर विकासखण्ड का 44. 82% निचलौल विकासखण्ड का 44.57% का स्थान आता है।

तालिका –1

जनपद महराजगंज में महिला साक्षरता एवं विकास की अनुक्रमंता श्रेणी (1991, 2001,2011)

क्र. सं.	वि० ख० का नाम	वर्ष		
		1991	2001	2011
1.	नौतनवा	8.95	21.32	43.53
2.	लक्ष्मीपुर	9.37	25.84	44.82
3.	निचलौल	6.44	21.73	44.57
4.	मिठौरा	7.50	26.58	48.60
5.	सिसवा	9.24	25.51	48.39
6.	ब्रह्मगंज	12.22	27.53	46.95
7.	महराजगंज	7.13	27.21	47.41
8.	घुघुली	8.27	29.03	50.81
9.	पनियरा	6.78	25.88	49.52
10.	परतावल	11.13	91.71	52.80
11	धानी	10.10	24.76	46.96
12	फरैदा	9.69	27.72	48.62
	योग जनपद	**10.28**	**27.93**	**48.92**

श्रोत :– जिला सांख्यिकी पुस्तिका 2012–13

निष्कर्ष

अध्ययन क्षेत्र एक ग्रामीण परिवेश के साथ ही पुरूष प्रधान क्षेत्र है। किसी क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक विकास में स्त्री–पुरूष दोनों सहभागिता आवश्यक होती है। महिला साक्षरता कम होने के कारण अध्ययन क्षेत्र का प्रादेशिक विकास अपेक्षाकृत कम हुआ है, क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में महिला साक्षरता की कमी होने के कारण अधिकांश महिलाएं कृषि एवं घरेलू कार्यों में लगी हुई है, जिसके कारण आर्थिक क्षेत्रों में उनकी सहभागिता कम पायी जाती है।

गौसल (1985) के अनसुार, शिक्षा स्वयं सामाजिक, आर्थिक प्रगति को संचालित तो नहीं करती किन्तु प्राकृतिक शक्तियों को नियंत्रित एवं सनरूपित करने तथा व्यवस्थित प्रावैधिक एवं न्यायपूर्ण समाज की रचना में साक्षरता एक शक्तिशाली उपकरण है। साक्षरता समाज को जागरूक वैज्ञानिक सोचयुक्त एवं प्रगतिशील बनाने में सक्रिय भूमिका निभाती है। साक्षरता किसी देश–प्रदेश एवं क्षेत्र के सामाजिक विकास की जननी, आधुनिकीकरण तथा पारस्परिक, भाग्वादी एवं निराशावादी भावनाओं को नियन्त्रित करने वाली एक कसौटी है।

शिक्षित महिलाओं का प्रभाव उनके बच्चों के व्यवहार पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। एक पुरूष के शिक्षित होने पर एक व्यक्ति शिक्षित होता है, जबकि एक महिला के शिक्षित होने पर परिवार एवं समाज शिक्षित होता है। किसी भी क्षेत्र के विकास के लिए महिलाओं का शिक्षित होना आवश्यक होता है तथा महिलाओं को शिक्षित करके भी समाज को विकास के शिखर पर पहुँचाया जा सकता है।

अध्ययन क्षेत्र में 1991 से 2011 के जनगणना वर्श के बीच महिला साक्षरता दर के प्रतिशत की तुलना में कम है, इसका प्रमुख कारण परम्परावादी पुरूश प्रधान भारतीय समाज में स्त्रियों को द्वितीय कोटि का नागरिक समझा जाता है तथा उनहें गृहकार्य हेतु मुख्यतः प्रतिबद्ध कर दिया जाता है। वर्तमान परिपेक्ष में केन्द्र सरकार के साक्षरता मिशन, जिला प्राथमिक कार्यक्रम , आपरेशन ब्लैक बोर्ड, औपचारिक, शिक्षा प्राथमिक विद्यालयों के लिए पोशाहार मानव विकास मंत्रालय द्वारा संचालित सर्वशिक्षा अभियान उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा में मात्रात्मक एवं गुणात्मक विकास हुआ है, परन्तु अभी भी महिला साक्षरता एवं विकास हेतु प्रयास की आवश्यकता है।

संदर्भ

1. **भैयालाल (2013)–** केराकत तहसील में महिला साक्षरता एवं विकास संविकास सन्देश, वॉल्यूम 21, नं0 011, जून, पृष्ठ 100–10
2. **चांदना, आर.सी. (2012)–** जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिशर्स, पृष्ठ 337।
3. **हीरालाल (2000)–** जनसंख्या, भूगोल, राधा पब्लिकेशनन्स, पृष्ठ 180–181 ।
4. **सिंह, कुसुम (2002)–** पूर्वी उत्तर प्रदेश में महिला साक्षरता एक भौगोकि अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, भूगोल विभाग, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर वश्वविद्यालय, गोरखपुर पृष्ठ 131–149
5. **सिंह, राकेश (2008)–** ग्रामीण विकास में अवस्थपना तत्व की भूमिका जनपद मऊ का प्रतीक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबंध, दीनदयाल गोरखपुर पृष्ठ 52।
6. **त्रिपाठी, आर0पी0 (1999)–** जनांकिकी एवं जनसंख्या अध्ययन, वसुन्धरा, प्रकाशन पृष्ठ 211।